सामाजिक शोध के उद्देश्य (Objects of Social Research)

परिभाषाओं के आधार पर हम सामाजिक शोध के निम्नलिखित उद्देश्यों का उल्लेख कर सकते हैं:

(1) सैद्धान्तिक उद्देश्य अथवा ज्ञान सम्बन्धी उद्देश्य।

(2) व्यावहारिक अथवा प्रयोगवादी उद्देश्य।

(1) सैद्धान्तिक उद्देश्य (Theoretical Objects)

(अ) केवल सामाजिक शोध ही नहीं, सभी प्रकार के शोध मूल रूप से ज्ञान की वृद्धि के साधन होते हैं। इस दृष्टिकोण से सामाजिक शोध का सैद्धान्तिक उद्देश्य सामाजिक जीवन, घटनाओं, तथ्यों या समस्याओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है। केवल नए तथ्यों के विषय में ही नहीं, अपितु पुराने तथ्यों के विषय में भी ज्ञान की प्राप्ति सामाजिक शोध का उद्देश्य होता है। सामाजिक तथ्य स्थिर या शाश्वत तथ्य नहीं होते हैं। सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों में परिवर्तन हो जाने पर सामाजिक तथ्यों में भी परिवर्तन हो जाता है और इसलिए आज एक तथ्य के सम्बन्ध में जो कुछ हमारा ज्ञान है वह आगे चलकर भी खरा बना रहेगा ऐसा हमारा विद्यमान ज्ञान सर्वथा अथवा अंशतः गलत हो। इसलिए आवश्यकता इस बात की होती है कि हम न केवल नए तथ्यों के सम्बन्ध में अनुसन्धान कर उनके सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करें अपितु पुराने तथ्यों की भी पुनः परीक्षा

कर इस बात को मालूम करें कि उनके सम्बन्ध में हमारा ज्ञान ठीक भी है या नहीं। ये दोनों ही कार्य सामाजिक शोध करता है। नवीन तथ्यों के विषय में अनुसन्धान कर तथा पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा कर सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में हमारे ज्ञान को गतिशील और प्रगतिशील बनाए रखना सामाजिक शोध का एक महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक उद्देश्य है।

(ब) सामाजिक शोध का दूसरा सैद्धान्तिक उद्देश्य विभिन्न सामाजिक घटनाओं या तथ्यों में पाये जाने वाले प्रकार्यात्मक सम्बन्धों (Functional relationship) को ढूंढना है। यह स्वीकार किया जाता है कि प्रत्येक सामाजिक घटना का या तथ्यों का सामाजिक संरचना के अन्तर्गत कोई न कोई प्रकार्य (Function) अवश्य ही होता है, चाहे उस प्रकार्य से सामाजिक संरचना व व्यवस्था पर अच्छा प्रभाव पड़े या बुरा। विद्वानों का तो मत यह है कि किसी भी सामाजिक तथ्य का प्रकार्यविहीन अस्तित्व (Functionless survival) ही सम्भव नहीं है। साथ ही सामाजिक जीवन या घटनाएँ कोई असम्बद्ध संयोग नहीं है। विभिन्न सामाजिक घटनाओं या तथ्यों में उनके द्वारा किये जाने वाले पृथक्-पृथक् प्रकार्यों के आधार पर प्रकार्यात्मक सम्बन्ध पाए जाते हैं। कहा जाता है कि इस प्रकार्यात्मक सम्बन्ध के कारण ही सामाजिक जीवन में निरन्तरता, गतिशीलता व व्यवस्था सम्भव होती है। सामा-

जिन शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य इन प्रकार्यात्मक सम्बन्धों का ढूंढ निकालना है, क्योंकि इन सम्बन्धों को समझे बिना किसी भी सामाजिक घटना या तथ्य की वास्तविक प्रकृति को समझा नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ, अपराध की घटना कब तक सही अर्थ में समझ नहीं सकते जब तक अपराध व गरीबी, अपराध व गन्दी बस्ती, अपराध व औद्योगीकरण आदि में पाये जाने वाले कार्य-कारण सम्बन्धों को भी हम समझ न लें।

(ब) सामाजिक शोध का एक और सैद्धान्तिक उद्देश्य उन स्वभाविक नियमों को ढूंढ निकालना है जिनके द्वारा सामाजिक घटनाएँ या जीवन निर्देशित या नियमित होता है। आज यह स्वीकार किया जाता है कि सामाजिक घटनाएँ आकस्मिक या स्वतः उत्पन्न नहीं होती है। जिस प्रकार पृथ्वी की गति, ऋतु-परिवर्तन, वर्षा, ज्वार-भाटा आदि प्राकृतिक घटनाएँ आकस्मिक नहीं है, बल्कि कुछ सुनिश्चित नियमों द्वारा संचालित व नियन्त्रित होती है, उसी प्रकार मानवीय या सामाजिक घटनाएँ भी कुछ स्वाभाविक सामाजिक नियमों के अन्तर्गत आती है और उन नियमों की व्यवस्थित पद्धति की सहायता से ढूंढा जा सकता है। अतः सामाजिक शोध का एक सैद्धान्तिक उद्देश्य उन नियमों को खोजना है जो कि सामाजिक घटनाओं को नियमित व नियन्त्रित करते हैं।

(F) श्रीमती यंग (P. V. Young) के अनुसार सामाजिक शोध का एक उद्देश्य प्रयोगसिद्ध तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक अवधारणाओं (scientific concepts) का निर्माण करना भी है। सांस्कृतिक संघर्ष, प्राथमिक नियन्त्रण, नगरीकरण, सांस्कृतिक प्रसार, सामाजिक दूरी आदि इसी प्रकार के अवधारणाओं के उदाहरण हैं। यह कहा जाता है कि सामाजिक विज्ञान की प्रगति और भी सरल होगी यदि पारिभाषिक शब्दों तथा अवधारणाओं का आवश्यक मानकीकरण (standardization) करने में समाज वैज्ञानिक को सफलता मिल जाए। इस दिशा में सामाजिक शोध का महत्वपूर्ण अनुदान है।